

18 -सुरः अल-कहफ़

मक्का में नाज़िल हुई और इसकी 110 आयतें हैं !

बिस्मिल्ला-हिर-रहमानिर-रहीम

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1. हर तरह की तारीफ़ खुदा ही को (सज़ावार) है जिसने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर किताब (कुरान) नाज़िल की और उसमें किसी तरह की कज़ी (खराबी) न रखी
2. बल्कि हर तरह से सधा ताकि जो सख्त अज़ाब खुदा की बारगाह से काफ़िरों पर नाज़िल होने वाला है उससे लोगों को डराए और जिन मोमिनीन ने अच्छे अच्छे काम किए हैं उनको इस बात की खुशख़बरी दे की उनके लिए बहुत अच्छा अज़्र (व सवाब) मौजूद है
3. जिसमें वह हमेशा (बाइत्मेनान) तमाम रहेंगे
4. और जो लोग इसके क़ाएल हैं कि खुदा औलाद रखता है उनको (अज़ाब से) डराओ
5. न तो उन्हीं को उसकी कुछ खबर है और न उनके बाप दादाओं ही को थी (ये) बड़ी सख्त बात है जो उनके मुँह से निकलती है ये लोग झूठ मूठ के सिवा (कुछ और) बोलते ही नहीं
6. तो (ऐ रसूल) अगर ये लोग इस बात को न माने तो यायद तुम मारे अफसोस के उनके पीछे अपनी जान दे डालोगे
7. और जो कुछ रुए ज़मीन पर है हमने उसकी ज़ीनत (रौनक़) क़रार दी ताकि हम लोगों का इम्तिहान लें कि उनमें से कौन सबसे अच्छा चलन का है
8. और (फिर) हम एक न एक दिन जो कुछ भी इस पर है (सबको मिटा करके) चटियल मैदान बना देंगे

9. (ऐ रसूल) क्या तुम ये खयाल करते हो कि असहाब कहफ व रक़ीम (खोह) और (तखती वाले) हमारी (कुदरत की) निशानियों में से एक अजीब (निशानी) थे
10. कि एक बारगी कुछ जवान ग़ार में आ पहुँचे और दुआ की-ऐ हमारे परवरदिगार हमें अपनी बारगाह से रहमत अता फरमा-और हमारे वास्ते हमारे काम में कामयाबी इनायत कर
11. तब हमने कई बरस तक ग़ार में उनके कानों पर पर्दे डाल दिए (उन्हें सुला दिया)
12. फिर हमने उन्हें चौकाया ताकि हम देखें कि दो गिरोहों में से किसी को (ग़ार में) ठहरने की मुद्दत खूब याद है
13. (ऐ रसूल) अब हम उनका हाल तुमसे बिल्कुल ठीक तहक़ीक़ातन (यक़ीन के साथ) बयान करते हैं वह चन्द जवान थे कि अपने (सच्चे) परवरदिगार पर ईमान लाए थे और हम ने उनकी सोच समझ और ज्यादा कर दी है
14. और हमने उनकी दिलों पर (सब्र व इस्तेक़लाल की) गिराह लगा दी (कि जब दक्रियानूस बादशाह ने कुफ़्र पर मजबूर किया) तो उठ खड़े हुए (और बे ताम्मुल (खटके)) कहने लगे हमारा परवरदिगार तो बस सारे आसमान व ज़मीन का मालिक है हम तो उसके सिवा किसी माबूद की हरगिज़ इबादत न करेंगे
15. अगर हम ऐसा करे तो यक़ीनन हमने अक़ल से दूर की बात कही (अफसोस एक) ये हमारी क़ौम के लोग हैं कि जिन्होंने ख़ुदा को छोड़कर (दूसरे) माबूद बनाए हैं (फिर) ये लोग उनके (माबूद होने) की कोई सरीही (खुली) दलील क्यों नहीं पेश करते और जो शख़श ख़ुदा पर झूट बोहतान बाँधे उससे ज्यादा ज़ालिम और कौन होगा
16. (फिर बाहम कहने लगे कि) जब तुमने उन लोगों से और ख़ुदा के सिवा जिन माबूदों की ये लोग परसतिश करते हैं उनसे किनारा कशी करली तो चलो (फलाँ) ग़ार में जा बैठो और तुम्हारा परवरदिगार अपनी रहमत तुम पर वसीह कर देगा और तुम्हारा काम में तुम्हारे लिए आसानी के सामान मुहय्या करेगा
17. (गरज़ ये ठान कर ग़ार में जा पहुँचे) कि जब सूरज निकलता है तो देखेगा कि वह उनके ग़ार से दाहिनी तरफ झुक कर निकलता है और जब गुरुब (डुबता) होता है तो उनसे बायीं तरफ कतरा जाता है और वह लोग (मजे से) ग़ार के अन्दर एक वसीइ (बड़ी) जगह में (लेटे) हैं ये

खुदा (की कुदरत) की निशानियों में से (एक निशानी) है जिसको हिदायत करे वही हिदायत याफ़ता है और जिस को गुमराह करे तो फिर उसका कोई सरपरस्त रहनुमा हरगिज़ न पाओगे

18. तू उनको समझेगा कि वह जागते हैं हालाँकि वह (गहरी नींद में) सो रहे हैं और हम कभी दाहिनी तरफ और कभी बायीं तरफ उनकी करवट बदलवा देते हैं और उनका कुत्ता अपने आगे के दोनो पाँव फैलाए चौखट पर डटा बैठा है (उनकी ये हालत है कि) अगर कहीं तू उनको झाक कर देखे तो उलटे पाँव ज़रूर भाग खड़े हो और तेरे दिल में दहशत समा जाए
19. और (जिस तरह अपनी कुदरत से उनको सुलाया) उसी तरह (अपनी कुदरत से) उनको (जगा) उठाया ताकि आपस में कुछ पूछ गछ करें (गरज़) उनमें एक बोलने वाला बोल उठा कि (भई आखिर इस ग़ार में) तुम कितनी मुद्दत ठहरे कहने लगे (अरे ठहरे क्या बस) एक दिन से भी कम उसके बाद कहने लगे कि जितनी देर तुम ग़ार में ठहरे उसको तुम्हारे परवरदिगार ही (कुछ तुम से) बेहतर जानता है (अच्छा) तो अब अपने में से किसी को अपना ये रुपया देकर शहर की तरफ भेजो तो वह (जाकर) देखभाल ले कि वहाँ कौन सा खाना बहुत अच्छा है फिर उसमें से (ज़रूरत भर) खाना तुम्हारे वास्ते ले आए और उसे चाहिए कि वह आहिस्ता चुपके से आ जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे
20. इसमें शक़ नहीं कि अगर उन लोगों को तुम्हारी इत्तेलाअ हो गई तो बस फिर तुम को संगसार ही कर देंगे या फिर तुम को अपने दीन की तरफ फेर कर ले जाएँगे और अगर ऐसा हुआ तो फिर तुम कभी कामयाब न होगे
21. और हमने यूँ उनकी क़ौम के लोगों को उनकी हालत पर इत्तेलाअ (ख़बर) कराई ताकि वह लोग देख लें कि खुदा को वायदा यक़ीनन सच्चा है और ये (भी समझ लें) कि क़यामत (के आने) में कुछ भी युभा नहीं अब (इत्तिलाआ होने के बाद) उनके बारे में लोग बाहम झगड़ने लगे तो कुछ लोगों ने कहा कि उनके (ग़ार) पर (बतौर यादगार) कोई इमारत बना दो उनका परवरदिगार तो उनके हाल से ख़ूब वाक़िफ़ है ही और उनके बारे में जिन (मोमिनीन) की राए ग़ालिब रही उन्होंने कहा कि हम तो उन (के ग़ार) पर एक मस्जिद बनाएँगे
22. करीब है कि लोग (नुसैरे नज़रान) कहेंगे कि वह तीन आदमी थे चौथा उनका कुत्ता (क़तमीर) है और कुछ लोग (आक़िब वग़ैरह) कहते हैं कि वह पाँच आदमी थे छठा उनका कुत्ता है (ये सब) ग़ैब में अटकल लगाते हैं और कुछ लोग कहते हैं कि सात आदमी हैं और

आठवाँ उनका कुत्ता है (ऐ रसूल) तुम कह दो की उनका सुमार मेरा परवरदिगार ही खब जानता है उन (की गिनती) के थोड़े ही लोग जानते हैं तो (ऐ रसूल) तुम (उन लोगों से) असहाब कहफ के बारे में सरसरी गुफ्तगू के सिवा (ज्यादा) न झगड़ों और उनके बारे में उन लोगों से किसी से कुछ पूछ गछ नहीं

23. और किसी काम की निस्बत न कहा करो कि मैं इसको कल करूँगा
24. मगर इन्शा अल्लाह कह कर और अगर (इन्शा अल्लाह कहना) भूल जाओ तो (जब याद आए) अपने परवरदिगार को याद कर लो (इन्शा अल्लाह कह लो) और कहो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे ऐसी बात की हिदायत फरमाए जो रहनुमाई में उससे भी ज्यादा करीब हो
25. और असहाब कहफ अपने गार में नौ ऊपर तीन सौ बरस रहे
26. (ऐ रसूल) अगर वह लोग इस पर भी न मानें तो तुम कह दो कि खुदा उनके ठहरने की मुद्दत से बखूबी वाक्फि है सारे आसमान और ज़मीन का ग़ैब उसी के वास्ते खास है (अल्लाह हो अकबर) वो कैसा देखने वाला क्या ही सुनने वाला है उसके सिवा उन लोगों का कोई सरपरस्त नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को अपना दखील (शरीक) नहीं बनाता
27. और (ऐ रसूल) जो किताब तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वही के ज़रिए से नाज़िल हुई है उसको पढ़ा करो उसकी बातों को कोई बदल नहीं सकता और तुम उसके सिवा कहीं कोई हरगिज़ पनाह की जगह (भी) न पाओगे
28. और (ऐ रसूल) जो लोग अपने परवरदिगार को सुबह सवेरे और झटपट वक्त याम को याद करते हैं और उसकी खुशनुदी के खवाहॉ हैं उनके उनके साथ तुम खुद (भी) अपने नफस पर जब्र करो और उनकी तरफ से अपनी नज़र (तवज्जो) न फेरो कि तुम दुनिया में ज़िन्दगी की आराइश चाहने लगे और जिसके दिल को हमने (गोया खुद) अपने ज़िक्र से ग़ाफिल कर दिया है और वह अपनी खवाहिशे नफसानी के पीछे पड़ा है और उसका काम सरासर ज्यादाती है उसका कहना हरगिज़ न मानना
29. और (ऐ रसूल) तुम कह दो कि सच्ची बात (कलमए तौहीद) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (नाज़िल हो चुकी है) बस जो चाहे माने और जो चाहे न माने (मगर) हमने ज़ालिमों के लिए वह आग (दहका के) तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उन्हें घेर लेगी और अगर वह लोग

दोहाई करेगें तो उनकी फरियाद रसी खौलते हुए पानी से की जाएगी जो मसलन पिघले हुए ताबें की तरह होगा (और) वह मुँह को भून डालेगा क्या बुरा पानी है और (जहन्नूम भी) क्या बुरी जगह है

30. इसमें शक़ नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम करते रहे तो हम हरगिज़ अच्छे काम वालो के अज़ को अकारत नहीं करते
31. ये वही लोग हैं जिनके (रहने सहने के) लिए सदाबहार (बेहश्त के) बागात हैं उनके (मकानात के) नीचे नहरें जारी होगीं वह उन बागात में दमकते हुए कुन्दन के कंगन से सँवारे जाँएंगें और उन्हें बारीक रेशम (क्रेब) और दबीज़ रेशम (वाफते)के धानी जोड़े पहनाए जाएँगे और तख्तों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे क्या ही अच्छा बदला है और (बेहश्त भी आसाइश की) कैसी अच्छी जगह है
32. और (ऐ रसूल) इन लोगों से उन दो शख़्शों की मिसाल बयान करो कि उनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दे रखे हैं और हमने चारो ओर खजूर के पेड़ लगा दिये हैं और उन दोनों बाग़ के दरमियान खेती भी लगाई है
33. वह दोनों बाग़ खूब फल लाए और फल लाने में कुछ कमी नहीं की और हमने उन दोनों बाग़ों के दरमियान नहर भी जारी कर दी है
34. और उसे फल मिला तो अपने साथी से जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा कि मैं तो तुझसे माल में (भी) ज्यादा हूँ और जत्थे में भी बढ़ कर हूँ
35. और ये बातें करता हुआ अपने बाग़ में भी जा पहुँचा हालाँकि उसकी आदत ये थी कि (कुफ़्र की वजह से) अपने ऊपर आप जुल्म कर रहा था (गरज़ वह कह बैठा) कि मुझे तो इसका गुमान नहीं तो कि कभी भी ये बाग़ उजड़ जाए
36. और मैं तो ये भी नहीं खयाल करता कि क़यामत क़ायम होगी और (बिलगरज़ हुई भी तो) जब मैं अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया जाऊँगा तो यक़ीनन इससे कहीं अच्छी जगह पाऊँगा

37. उसका साथी जो उससे बातें कर रहा था कहने लगा कि क्या तू उस परवरदिगार का मुन्किर है जिसने (पहले) तुझे मिट्टी से पैदा किया फिर नुत्फे से फिर तुझे बिल्कुल ठीक मर्द (आदमी) बना दिया
38. हम तो (कहते हैं कि) वही खुदा मेरा परवरदिगार है और मैं तो अपने परवरदिगार का किसी को शरीक नहीं बनाता
39. और जब तू अपने बाग में आया तो (ये) क्यों न कहा कि ये सब (माशा अल्लाह खुदा ही के चाहने से हुआ है (मेरा कुछ भी नहीं क्योंकि) बगैर खुदा की (मदद) के (किसी में) कुछ सकत नहीं अगर माल और औलाद की राह से तू मुझे कम समझता है
40. तो अनक़ीरब ही मेरा परवरदिगार मुझे वह बाग अता फरमाएगा जो तेरे बाग से कहीं बेहतर होगा और तेरे बाग पर कोई ऐसी आफत आसमान से नाज़िल करे कि (खाक सियाह) होकर चटियल चिकना सफ़ाचट मैदान हो जाए
41. उसका पानी नीचे उतर (के खुश्क) हो जाए फिर तो उसको किसी तरह तलब न कर सके
42. (चुनान्चे अज़ाब नाज़िल हुआ) और उसके (बाग के) फल (आफत में) घेर लिए गए तो उस माल पर जो बाग की तैयारी में सर्फ (खर्च) किया था (अफसोस से) हाथ मलने लगा और बाग की ये हालत थी कि अपनी टहनियों पर औंधा गिरा हुआ पड़ा था तो कहने लगा काश मैं अपने परवरदिगार का किसी को शरीक न बनाता
43. और खुदा के सिवा उसका कोई जत्था भी न था कि उसकी मदद करता और न वह बदला ले सकता था इसी जगह से (साबित हो गया
44. कि सरपरस्ती खास खुदा ही के लिए है जो सच्चा है वही बेहतर सवाब (देने) वाला है और अन्जाम के जंगल से भी वही बेहतर है
45. और (ऐ रसूल) इनसे दुनिया की ज़िन्दगी की मसल भी बयान कर दो कि उसके हालत पानी की सी है जिसे हमने आसमान से बरसाया तो ज़मीन की उगाने की ताक़त उसमें मिल गई और (खूब फली फूली) फिर आख़िर रेज़ा रेज़ा (भूसा) हो गई कि उसको हवाएँ उड़ाए फिरती है और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

46. (ऐ रसूल) माल और औलाद (इस ज़रा सी) दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक़ सवाब में उससे कहीं ज्यादा अच्छी हैं और तमन्नाएँ व आरजू की राह से (भी) बेहतर हैं
47. और (उस दिन से डरो) जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और तुम ज़मीन को खुला मैदान (पहाड़ों से) खाली देखोगे और हम इन सभी को इकट्ठा करेंगे तो उनमें से एक को न छोड़ेंगे
48. सबके सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने कतार पे क़तार पेश किए जाएँगे और (उस वक़्त हम याद दिलाएँगे कि जिस तरह हमने तुमको पहली बार पैदा किया था (उसी तरह) तुम लोगों को (आख़िर) हमारे पास आना पड़ा मगर तुम तो ये ख़याल करते थे कि हम तुम्हारे (दोबारा पैदा करने के) लिए कोई वक़्त ही न ठहराएँगे
49. और लोगों के आमाल की किताब (सामने) रखी जाएँगी तो तुम गुनेहगारों को देखोगे कि जो कुछ उसमें (लिखा) है (देख देख कर) सहमे हुए हैं और कहते जाते हैं हाए हमारी यामत ये कैसी किताब है कि न छोटे ही गुनाह को बे क़लमबन्द किए छोड़ती है न बड़े गुनाह को और जो कुछ इन लोगों ने (दुनिया में) किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएँगे और तेरा परवरदिगार किसी पर (ज़रा बराबर) जुल्म न करेगा
50. और (वह वक़्त याद करो) जब हमने फ़रिशतों को हुक़म दिया कि आदम को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया (ये इबलीस) जिन्नात से था तो अपने परवरदिगार के हुक़म से निकल भागा तो (लोगों) क्या मुझे छोड़कर उसको और उसकी औलाद को अपना दोस्त बनाते हो हालाँकि वह तुम्हारा (क़दीमी) दुश्मन हैं ज़ालिमों (ने ख़ुदा के बदले शैतान को अपना दोस्त बनाया ये उन) का क्या बुरा ऐवज़ है
51. मैंने न तो आसमान व ज़मीन के पैदा करने के वक़्त उनको (मदद के लिए) बुलाया था और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक़्त और मैं (ऐसा गया गुज़रा) न था कि मैं गुमराह करने वालों को मददगार बनाता
52. और (उस दिन से डरो) जिस दिन ख़ुदा फरमाएगा कि अब तुम जिन लोगों को मेरा शरीक़ ख़याल करते थे उनको (मदद के लिए) पुकारो तो वह लोग उनको पुकारेंगे मगर वह लोग उनकी कुछ न सुनेंगे और हम उन दोनों के बीच में महलक (खतरनाक) आड़ बना देंगे

53. और गुनेहगार लोग (देखकर समझ जाएँगे कि ये इसमें सोके जाएँगे और उससे गरीज़ (बचने की) की राह न जाएँगे)
54. और हमने तो इस कुरान में लोगों (के समझाने) के वास्ते हर तरह की मिसालें फेर बदल कर बयान कर दी है मगर इन्सान तो तमाम मखलूक़ात से ज्यादा झगड़ालू है
55. और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो (फिर) उनको ईमान लाने और अपने परवरदिगार से मग़फ़िरत की दुआ माँगने से (उसके सिवा और कौन) अम मायने है कि अगलों की सी रीत रस्म उनको भी पेश आई या हमारा अज़ाब उनके सामने से (मौजूद) हो
56. और हम तो पैग़म्बरों को सिर्फ़ इसलिए भेजते हैं कि (अच्छों को निजात की) खुशख़बरी सुनाएं और (बदों को अज़ाब से) डराएं और जो लोग काफ़िर हैं झूटी झूटी बातों का सहारा पकड़ के झगड़ा करते हैं ताकि उसकी बदौलत हक़ को (उसकी जगह से उखाड़ फेंके और उन लोगों ने मेरी आयतों को जिस (अज़ाब से) ये लोग डराए गए हँसी वृथा (मज़ाक) बना रखा है
57. और उससे बढ़कर और कौन ज़ालिम होगा जिसको खुदा की आयतें याद दिलाई जाए और वह उनसे रद गिरदानी (मुँह फेर ले) करे और अपने पहले करतूतों को जो उसके हाथों ने किए हैं भूल बैठे (गोया) हमने खुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि वह (हक़ बात को) न समझ सकें और (गोया) उनके कानों में गिरानी पैदा कर दी है कि (सुन न सकें) और अगर तुम उनको राहे रास्त की तरफ़ बुलाओ भी तो ये हरगिज़ कभी रुबरु होने वाले नहीं हैं
58. और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है अगर उनकी करतूतों की सज़ा में धर पकड़ करता तो फ़ौरन (दुनिया ही में) उन पर अज़ाब नाज़िल कर देता मगर उनके लिए तो एक मियाद (मुक़र्रर) है जिससे खुदा के सिवा कहीं पनाह की जगह न जाएंगे
59. और ये बस्तियाँ (जिन्हें तुम अपनी आँखों से देखते हो) जब उन लोगों ने सरकशी तो हमने उन्हें हलाक कर मारा और हमने उनकी हलाकत की मियाद मुक़र्रर कर दी थी
60. (ऐ रसूल) वह वाक़या याद करो जब मूसा खिज़्र की मुलाक़ात को चले तो अपने जवान वसी यूशा से बोले कि जब तक में दोनों दरियाओं के मिलने की जगह न पहुँच जाऊँ (चलने से) बाज़ न आऊँगा

61. ख्वाह (अगर मुलाक़ात न हो तो) बरसों यूँ ही चलता जाऊँगा फिर जब ये दोनों उन दोनों दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे तो अपनी (भुनी हुई) मछली छोड़ चले तो उसने दरिया में सुरंग बनाकर अपनी राह ली
62. फिर जब कुछ और आगे बढ़ गए तो मूसा ने अपने जवान (वसी) से कहा (अजी हमारा नाश्ता तो हमें दे दो हमारे (आज के) इस सफर से तो हमको बड़ी थकन हो गई
63. (यूशा ने) कहा क्या आप ने देखा भी कि जब हम लोग (दरिया के किनारे) उस पत्थर के पास ठहरे तो मैं (उसी जगह) मछली छोड़ आया और मुझे आप से उसका ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया और मछली ने अजीब तरह से दरिया में अपनी राह ली
64. मूसा ने कहा वही तो वह (जगह) है जिसकी हम जुस्तजू (तलाश) में थे फिर दोनों अपने क़दम के निशानों पर देखते देखते उलटे पाँव फिरे
65. तो (जहाँ मछली थी) दोनों ने हमारे बन्दों में से एक (खास) बन्दा खिज़्र को पाया जिसको हमने अपनी बारगाह से रहमत (विलायत) का हिस्सा अता किया था
66. और हमने उसे इल्म लदुन्नी (अपने खास इल्म) में से कुछ सिखाया था मूसा ने उन (खिज़्र) से कहा क्या (आपकी इजाज़त है कि) मैं इस गरज़ से आपके साथ साथ रहूँ
67. कि जो रहनुमाई का इल्म आपको है (खुदा की तरफ से) सिखाया गया है उसमें से कुछ मुझे भी सिखा दीजिए खिज़्र ने कहा (मैं सिखा दूँगा मगर) आपसे मेरे साथ सब्र न हो सकेगा
68. और (सच तो ये है) जो चीज़ आपके इल्मी अहाते से बाहर हो
69. उस पर आप सब्र क्योंकर कर सकते हैं मूसा ने कहा (आप इत्मिनान रखिए) अगर खुदा ने चाहा तो आप मुझे साबिर आदमी पाएँगे
70. और मैं आपके किसी हुक्म की नाफरमानी न करूँगा खिज़्र ने कहा अच्छा तो अगर आप को मेरे साथ रहना है तो जब तक मैं खुद आपसे किसी बात का ज़िक्र न छेड़ूँ

71. आप मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछियेगा गरज़ ये दोनो (मिलकर) चल खड़े हुए यहाँ तक कि (एक दरिया में) जब दोनों कश्ती में सवार हुए तो खिज़्र ने कश्ती में छेद कर दिया मूसा ने कहा (आप ने तो ग़ज़ब कर दिया) क्या कश्ती में इस गरज़ से सुराख किया है
72. कि लोगों को डुबा दीजिए ये तो आप ने बड़ी अजीब बात की है-खिज़्र ने कहा क्या मैंने आप से (पहले ही) न कह दिया था
73. कि आप मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे-मूसा ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ आप मेरी गिरफ्त न कीजिए और मुझ पर मेरे इस मामले में इतनी सख्ती न कीजिए
74. (खैर ये तो हो गया) फिर दोनों के दोनों आगे चले यहाँ तक कि दोनों एक लड़के से मिले तो उस बन्दे खुदा ने उसे जान से मार डाला मूसा ने कहा (ऐ माज़ अल्लाह) क्या आपने एक मासूम शख्स को मार डाला और वह भी किसी के (खौफ के) बदले में नहीं आपने तो यक़ीनी एक अजीब हरकत की
75. खिज़्र ने कहा कि मैंने आपसे (मुकर्रर) न कह दिया था कि आप मेरे साथ हरगिज़ नहीं सब्र कर सकेंगे
76. मूसा ने कहा (खैर जो हुआ वह हुआ) अब अगर मैं आप से किसी चीज़ के बारे में पूछगछ करूँगा तो आप मुझे अपने साथ न रखियेगा बेशक आप मेरी तरफ से माज़रत (की हद को) पहुँच गए
77. गरज़ (ये सब हो हुआ कर फिर) दोनों आगे चले यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों के पास पहुँचे तो वहाँ के लोगों से कुछ खाने को माँगा तो उन लोगों ने दोनों को मेहमान बनाने से इन्कार कर दिया फिर उन दोनों ने उसी गाँव में एक दीवार को देखा कि गिरा ही चाहती थी तो खिज़्र ने उसे सीधा खड़ा कर दिया उस पर मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो (इन लोगों से) इसकी मज़दूरी ले सकते थे
78. (ताकि खाने का सहारा होता) खिज़्र ने कहा मेरे और आपके दरमियान छुट्टम छुट्टा अब जिन बातों पर आप से सब्र न हो सका मैं अभी आप को उनकी असल हक़ीकत बताए देता हूँ
79. (लीजिए सुनिये) वह कश्ती (जिसमें मैंने सुराख कर दिया था) तो चन्द ग़रीबों की थी जो दरिया में मेहनत करके गुज़ारा करते थे मैंने चाहा कि उसे ऐबदार बना दूँ (क्योंकि) उनके

पीछे-पीछे एक (ज़ालिम) बादशाह (आता) था कि तमाम कश्तियां ज़बरदस्ती बेगार में पकड़ लेता था

80. और वह जो लड़का जिसको मैंने मार डाला तो उसके माँ बाप दोनों (सच्चे) ईमानदार हैं तो मुझको ये अन्देशा हुआ कि (ऐसा न हो कि बड़ा होकर) उनको भी अपने सरकशी और कुफ़्र में फँसा दे
81. तो हमने चाहा कि (हम उसको मार डाले और) उनका परवरदिगार इसके बदले में ऐसा फरज़न्द अता फरमाए जो उससे पाक नफ़सी और पाक कराबत में बेहतर हो
82. और वह जो दीवार थी (जिसे मैंने खड़ा कर दिया) तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उसके नीचे उन्हीं दोनों लड़कों का खज़ाना (गड़ा हुआ था) और उन लड़कों का बाप एक नेक आदमी था तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँचे तो तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से अपना खज़ाने निकाल ले और मैंने (जो कुछ किया) कुछ अपने एखितयार से नहीं किया (बल्कि खुदा के हुक्म से) ये हकीक़त है उन वाक़यात की जिन पर आपसे सब्र न हो सका
83. और (ऐ रसूल) तुमसे लोग जुलकरनैन का हाल (इम्तेहान) पूछा करते हैं तुम उनके जवाब में कह दो कि मैं भी तुम्हें उसका कुछ हाल बता देता हूँ
84. (खुदा फरमाता है कि) बेशक हमने उनको ज़मीन पर कुदरतें हुक्मत अता की थी और हमने उसे हर चीज़ के साज़ व सामान दे रखे थे
85. वह एक सामान (सफर के) पीछे पड़ा
86. यहाँ तक कि जब (चलते-चलते) आफताब के गुरुब होने की जगह पहुँचा तो आफताब उनको ऐसा दिखाई दिया कि (गोया) वह काली कीचड़ के चश्में में डूब रहा है और उसी चश्में के करीब एक क़ौम को भी आबाद पाया हमने कहा ऐ जुलकरनैन (तुमको एखितयार है) ख्वाह इनके कुफ़्र की वजह से इनकी सज़ा करो (कि ईमान लाए) या इनके साथ हुस्ने सुलूक का शेवा एखितयार करो (कि खुद ईमान कुबूल करें)

87. जुलकरनैन ने अर्ज़ की जो शख्स सरकशी करेगा तो हम उसकी फौरन सज़ा कर देंगे (आखिर) फिर वह (क्रयामत में) अपने परवरदिगार के सामने लौटाकर लाया ही जाएगा और वह बुरी से बुरी सज़ा देगा
88. और जो शख्स ईमान कुबूल करेगा और अच्छे काम करेगा तो (वैसा ही) उसके लिए अच्छे से अच्छा बदला है और हम बहुत जल्द उसे अपने कामों में से आसान काम (करने) को कहेंगे
89. फिर उस ने एक दूसरी राह एखितयार की
90. यहाँ तक कि जब चलते-चलते आफताब के तूलूड होने की जगह पहुँचा तो (आफताब) से ऐसा ही दिखाई दिया (गोया) कुछ लोगों के सर पर उस तरह तुलूड कर रहा है जिन के लिए हमने आफताब के सामने कोई आड़ नहीं बनाया था
91. और था भी ऐसा ही और जुलकरनैन के पास वो कुछ भी था हमको उससे पूरी वाकफ़ियत थी
92. (गरज़) उसने फिर एक और राह एखितयार की
93. यहाँ तक कि जब चलते-चलते रोम में एक पहाड़ के (कंगुरों के) दीवारों के बीचो बीच पहुँच गया तो उन दोनों दीवारों के इस तरफ एक क्रौम को (आबाद) पाया तो बात चीत कुछ समझ ही नहीं सकती थी
94. उन लोगों ने मुतरज्जिम के ज़रिए से अर्ज़ की ऐ जुलकरनैन (इसी घाटी के उधर याजूज माजूज की क्रौम है जो) मुल्क में फ़साद फैलाया करते हैं तो अगर आप की इजाज़त हो तो हम लोग इस गर्ज़ से आपसे पास चन्दा जमा करें कि आप हमारे और उनके दरमियान कोई दीवार बना दें
95. जुलकरनैन ने कहा कि मेरे परवरदिगार ने खर्च की जो कुदरत मुझे दे रखी है वह (तुम्हारे चन्दे से) कहीं बेहतर है (माल की ज़रूरत नहीं) तुम फ़क़त मुझे कूवत से मदद दो तो मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक रोक बना दूँ
96. (अच्छा तो) मुझे (कहीं से) लोहे की सिले ला दो (चुनान्चे वह लोग) लाए और एक बड़ी दीवार बनाई यहाँ तक कि जब दोनो कंगूरो के दरमेयान (दीवार) को बुलन्द करके उनको बराबर कर

दिया तो उनको हुक्म दिया कि इसके गिर्द आग लगाकर धौको यहां तक उसको (धौंकते-धौंकते) लाल ँंगारा बना दिया

97. तो कहा कि अब हमको ताँबा दो कि इसको पिघलाकर इस दीवार पर उँडेल दें (गरज़) वह ऐसी ऊँची मज़बूत दीवार बनी कि न तो याजूज व माजूज उस पर चढ़ ही सकते थे और न उसमें नक्रब लगा सकते थे
98. जुलकरनैन ने (दीवार को देखकर) कहा ये मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है मगर जब मेरे परवरदिगार का वायदा (क़यामत) आयेगा तो इसे ढहा कर हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है
99. और हम उस दिन (उन्हें उनकी हालत पर) छोड़ देंगे कि एक दूसरे में (टकरा के दरिया की) लहरों की तरह गुड़मुड़ हो जाएँ और सूर फूँका जाएगा तो हम सब को इकट्ठा करेंगे
100. और उसी दिन जहन्नुम को उन काफिरों के सामने खुल्लम खुल्ला पेश करेंगे
101. और उसी (रसूल की दुश्मनी की सच्ची बात) कुछ भी सुन ही न सकते थे
102. तो क्या जिन लोगों ने कुफ़्र एखितयार किया इस खयाल में हैं कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों को अपना सरपरस्त बना लें (कुछ पूछगछ न होगी) (अच्छा सुनो) हमने काफिरों की मेहमानदारी के लिए जहन्नुम तैयार कर रखी है
103. (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या हम उन लोगों का पता बता दें जो लोग आमाल की हैसियत से बहुत घाटे में हैं
104. (ये) वह लोग (हैं) जिन की दुनियावी ज़िन्दगी की राई (कोशिश सब) अकारत हो गई और वह उस ख़ाम खयाल में हैं कि वह यकीनन अच्छे-अच्छे काम कर रहे हैं
105. यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयातों से और (क़यामत के दिन) उसके सामने हाज़िर होने से इन्कार किया तो उनका सब किया कराया अकारत हुआ तो हम उसके लिए क़यामत के दिन मीजान हिसाब भी क़ायम न करेंगे

106. (और सीधे जहन्नुम में झाँक देंगे) ये जहन्नुम उनकी करतूतों का बदला है कि उन्होंने कुफ़्र एख़्तियार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को हँसी ठग़ा बना लिया
107. बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किये उनकी मेहमानदारी के लिए फिरदौस (बरी) के बागात होंगे जिनमें वह हमेशा रहेंगे
108. और वहाँ से हिलने की भी ख्वाहिश न करेंगे
109. (ऐ रसूल उन लोगों से) कहो कि अगर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) वास्ते समन्दर (का पानी) भी सियाही बन जाए तो क़बूल उसके कि मेरे परवरदिगार की बातें ख़त्म हों समन्दर ही ख़त्म हो जाएगा अगरचे हम वैसा ही एक समन्दर उस की मदद को लाँए
110. (ऐ रसूल) कह दो कि मैं भी तुम्हारा ही ऐसा एक आदमी हूँ (फ़र्क़ इतना है) कि मेरे पास ये वही आई है कि तुम्हारे माबूद यक़ता माबूद हैं तो वो शख़्स आरज़ूमन्द होकर अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होगा तो उसे अच्छे काम करने चाहिए और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न करें